

समाचार वाणी

खबर जो करें असर !

नाशिक | Wednesday, 30 September 2026

700 एकड़ जमीन, 70 करोड़ का टर्नओवर, सरकारी नौकरी छोड़ काली मिट्टी से उगाया सोना, पढ़े हेलीकॉप्टर किसान की सफलता की कहानी।

Publisher

Published on 05 May 2025



कई युवा लोग कृषि में संकारात्मक प्रयोग करते नजर आ रहे हैं। आज हम एक ऐसे किसान की सफलता की कहानी देखेंगे जिसने सरकारी नौकरी छोड़ दी और करोड़ों रुपए कमाए।

देश की राजधानी दिल्ली से 1500 किलोमीटर दूर स्थित छत्तीसगढ़ का कोंडागांव जिला दो कारणों से प्रसिद्ध है। एक तो वहां की शिल्पकला और दूसरा वहां की प्राकृतिक सुंदरता। लेकिन धीरे-धीरे जिले में स्थिति बदल रही है। कई युवा लोग कृषि में सकारात्मक प्रयोग करते नजर आ रहे हैं। आज हम इसी जगह के एक किसान की सफलता की कहानी देखेंगे। किसान का नाम राजाराम त्रिपाठी है। इस किसान ने हाल ही में एक हेलीकॉप्टर खरीदा है।

किसान राजाराम त्रिपाठी ने 'काला और सफेद सोना' उगाकर करोड़ों रुपए का मुनाफा कमाया है। काले सोने का मतलब काली मिर्च है और सफेद सोने का मतलब सफेद सरसों है। (सफेद मूसली एक आयुर्वेदिक औषधीय पौधा है जिसका उपयोग हमारे देश में सदियों से किया जा रहा है। यह बहुत ही गुणकारी और कई बीमारियों की रामबाण औषधि है।) इस समय बाजार में अच्छी क्वालिटी की काली मिर्च करीब 100 रुपये किलो बिक रही है। 1000 प्रति किलोग्राम. वहीं, सफेद मूसली की कीमत 2000 रुपए से अधिक है।

सर्वश्रेष्ठ किसान पुरस्कार

दो बार पीएचडी प्राप्त राजाराम त्रिपाठी को छह बार देश के सर्वश्रेष्ठ किसान का पुरस्कार मिल चुका है। उन्होंने अपनी 700 एकड़ जमीन पर विभिन्न फसलें उगाई हैं। जमीन पर उगाई गई फसल को बेचने के बाद उनका सालाना टर्नओवर 70 करोड़ रुपये तक पहुंच जाता है। उनकी खेती की तकनीकें बहुत अलग हैं। वे अपनी फसलें अमेरिका, जापान और अरब देशों को भी आपूर्ति करते

हैं। डॉ. राजाराम त्रिपाठी शुरू से ही इतने समृद्ध किसान नहीं थे। उन्होंने बैंक की नौकरी छोड़ने के बाद यह काम शुरू किया।

बैंक की नौकरी

त्रिपाठी द्वारा दी गई जानकारी के अनुसार मेरे दादा के पास 30 एकड़ जमीन थी। मेरे पिता भी खेती करते थे। अपनी शिक्षा पूरी करने के बाद मुझे एसबीआई ग्रामीण बैंक में नौकरी मिल गई। मैंने काम करना शुरू कर दिया है। लेकिन मेरा मन और दिल मेरे खेतों पर ही केंद्रित रहा। यह दो या तीन साल तक चलता रहा, फिर 1995 में मैंने नौकरी छोड़कर पूर्णकालिक खेती करने का निर्णय लिया।

बैंक अध्यक्ष ने मुझे नौकरी छोड़ने नहीं दिया।

मैं बैंक अध्यक्ष के कार्यालय पहुंचा। मेरी पत्नी भी मेरे साथ थी। चेयरमैन ने उनसे पूछा, “क्या आप जानती हैं कि आपके पति बैंक में अपनी अच्छी-खासी नौकरी छोड़कर खेती करना चाहते हैं?” मेरी पत्नी ने उनसे कहा कि वह मेरे निर्णय से सहमत है। वे मुझे समझाते रहे कि अगर मैं तीन-चार साल और काम करूंगा तो मुझे वीआरएस मिल जाएगा। मैंने उनसे कहा कि जब मैं बैंक में होता हूं तो मेरा ध्यान खेत में रहता है और जब मैं खेत में जाता हूं तो बैंक मेरे ध्यान में रहता है। मैंने अपने दिल की बात सुनने का फैसला करने के बाद ही इस्तीफा दिया है। जैसे ही मैंने यह कहा, राष्ट्रपति ने मेरा इस्तीफा स्वीकार कर लिया।

त्रिपाठी का कृषि मॉडल क्या है?

राजाराम त्रिपाठी की खेती पारंपरिक खेती से बिल्कुल अलग है। उन्होंने अपनी कुल भूमि के 10 प्रतिशत भाग पर पेड़ लगाये हैं। इसके अनेक लाभ हैं। तीव्र सूर्य प्रकाश का फसलों पर सीधा प्रभाव नहीं पड़ता। गर्म मौसम से फसलों पर कोई असर नहीं पड़ता। ऐसे पेड़ लगाए जाते हैं जो सदाबहार रहते हैं और जिनके पत्ते हर दिन गिरते रहते हैं। ये पत्तियाँ ज़मीन पर गिरकर नमी पैदा करती हैं। इससे मिट्टी जल्दी सूखने से बच जाती है और फिर पत्तियां सड़ कर खाद में बदल जाती हैं। हमारी ज़मीन पर इन पत्तियों से लगभग 6 टन उर्वरक स्वतः ही उत्पन्न हो जाता है। हम ऐसे पौधे लगाते हैं जो नाइट्रोजन ग्रहण करते हैं और उसे सीधे जड़ों तक पहुंचाते हैं। इससे आपको 3 प्रतिशत कम गर्मी महसूस होगी।

ऑस्ट्रेलियाई बबूल बागान

हमने जमीन के चारों ओर ऑस्ट्रेलियाई बबूल के पेड़ लगाए हैं। प्रति एकड़ लागत 2 लाख रुपये है। 10 साल बाद इन पेड़ों की लकड़ी 2 से 2.5 करोड़ रुपये में बिकती है।

भारत हर साल अन्य देशों से लगभग 45 लाख करोड़ रुपये मूल्य की लकड़ी का आयात करता है। यदि हम इस मॉड्यूल का उपयोग करके खेती करें तो न केवल लाभ कमा सकते हैं बल्कि देश का सहारा भी बन सकते हैं। हम अंगूर भी उगाते हैं। एक एकड़ से 50 एकड़ के बराबर उपज प्राप्त होती है। काली मिर्च की बेलें पेड़ों से लटक रही हैं। त्रिपाठी ने बताया कि बीच में बची जगह में हल्दी, सफ़ेद मूसली और अश्वगंधा के पौधे लगाए जा रहे हैं।

काली मिर्च की खेती से बड़ा मुनाफा

काली मिर्च तीसरे वर्ष से उपज देना शुरू कर देती है। आपको प्रति एकड़ 4 से 5 लाख रुपये मिलते हैं। बीच में 90 प्रतिशत स्थान खाली रहता है। आप इसमें टमाटर, चना, भिंडी आदि उगा सकते हैं। पहले केवल केरल का मालाबार क्षेत्र ही काली मिर्च के लिए प्रसिद्ध था, लेकिन हमने छत्तीसगढ़ के जंगलों में भी इसे उगाकर दिखाया। हमारी काली मिर्च की गुणवत्ता बहुत अच्छी है। हमने अपनी काली मिर्च को चयन प्रक्रिया के माध्यम से विकसित किया है, जिससे हमें दूसरों की तुलना में चार गुना अधिक उपज मिलती है। हमने जो हासिल किया है वह किसी चमत्कार से कम नहीं है। काली मिर्च की खेती एक बार का निवेश है। एक बार लगाए जाने के बाद इसके पेड़ 100 साल तक फसल पैदा करते हैं। यह सीधे तौर पर लाभ देने वाली खेती है।

कृषि के लिए हेलीकॉप्टरों का उपयोग

त्रिपाठी को हेलीकॉप्टर किसान के नाम से भी जाना जाता है। हेलीकॉप्टर खरीदने के विचार के बारे में राजाराम त्रिपाठी कहते हैं कि उन्होंने हेलीकॉप्टर केवल कृषि उपयोग के लिए खरीदा था। वास्तव में, उन्हें और उनकी टीम को एक साथ हजारों एकड़ भूमि पर छिड़काव करना पड़ता है। मनुष्य यह काम तेजी से नहीं कर सकते, इसलिए वे हेलीकॉप्टर की मदद से पूरे खेत में छिड़काव करते हैं। हमारे देश के लिए यह नई बात है, लेकिन अमेरिका और यूरोप में कृषि के लिए हेलीकॉप्टर का उपयोग आम बात है। फसल उत्पादन को केवल प्रौद्योगिकी के उपयोग से ही बढ़ाया जा सकता है, इसलिए सरकार को उस नीति को तैयार करने के लिए आगे आना चाहिए।

पूरे क्षेत्र के किसानों का प्रतिनिधित्व

राजाराम त्रिपाठी अपने पूरे क्षेत्र के किसानों का प्रतिनिधित्व करते हैं। 25 से 30 गांवों के लगभग 20-25 हजार किसान इनसे जुड़े हुए हैं। वे सभी अलग-अलग तरीके से खेती करते हैं, लेकिन अपनी पूरी फसल एक साथ बाजार में लाते हैं। इसके साथ ही ये किसान अपनी उपज का पूरा मूल्य मांगते हैं तथा खरीदार को उत्तम गुणवत्ता वाला सामान उपलब्ध कराते हैं। अगर उनके पूरे ग्रुप की बात करें तो ग्रुप का सालाना टर्नओवर 600-700 करोड़ रुपए है। राजाराम त्रिपाठी कृषि पर व्याख्यान देने के लिए 40 से अधिक देशों का दौरा कर चुके हैं। जिसमें जर्मनी, हैम्बर्ग, हॉलैंड, ईरान, दुबई, कतर, इथियोपिया, दक्षिण अफ्रीका, मोजाम्बिक और ब्राजील शामिल हैं। राजाराम त्रिपाठी मां दंतेश्वरी हर्बल ग्रुप भी चलाते हैं, जिनके उत्पाद विदेशों में भी भेजे जाते हैं। इस समूह का प्रबंधन उनकी बेटी अपूर्वा त्रिपाठी करती हैं।

DISCLAIMER: the views/contents expressed/presented herein, within this advertorial and promotional feature are the sole and exclusive responsibility of individual clients/expert/their authorised representative/Publisher, to which effect, publication house/its representative/affiliates are not responsible/liable whatsoever.